इतिहास और नागरिक शास्त्र

सातवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

इतिहास और नागरिक शास्त्र

सातवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

721HIC

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१७
पुनर्मुद्रण : सितम्बर २०२०

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

इतिहास विषय समिति

डॉ. सदानंद मोरे, अध्यक्ष
श्री मोहन शेटे, सदस्य
श्री पांडुरंग बलकवडे, सदस्य
डॉ. अभिराम दीक्षित, सदस्य
श्री बापूसाहेब शिंदे, सदस्य
श्री बाळकृष्ण चोपडे, सदस्य
श्री प्रशांत सरूडकर, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

नागरिक शास्त्र विषय समिति

डॉ. श्रीकांत परांजपे, अध्यक्ष
प्रा. साधना कुलकर्णी, सदस्य
डॉ. मोहन काशीकर, सदस्य
श्री वैजनाथ काळे, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

लेखिका

डॉ.शुभांगना अत्रे
प्रा.साधना कुलकर्णी

भाषांतरकार

प्रा.शशि मुरलीधर निघोजकर

समीक्षक

डॉ.प्रमोद शुक्ल

भाषांतर संयोजन

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी, हिंदी

संयोजन सहायक

सौ.संध्या वि. उपासनी
विषय सहायक, हिंदी

निमंत्रित

डॉ.सोमनाथ रोडे, डॉ.गणेश राऊत

मुखपृष्ठ एवं सजावट

श्री देवदत्त प्रकाश बलकवडे

किले के छायाचित्र (फोटो)

श्री प्रविण भोसले

मानचित्रकार

श्री रविकिरण जाधव

अक्षरांकन

मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज

७० जी.एस.एम. क्रिमवोव

मुद्रणादेश

मुद्रक

इतिहास और नागरिक शास्त्र अभ्यास गट

श्री राहुल प्रभू
श्री संजय वझरेकर
श्री सुभाष राठोड
सौ. सुनीता दळवी
डॉ. शिवानी लिमये
श्री भाऊसाहेब उमाटे
डॉ. नागनाथ येवले
श्री सदानंद डोंगरे
श्री रवींद्र पाटील
श्री विक्रम अडसूळ
सौ. रूपाली गिरकर
डॉ. मिनाक्षी उपाध्याय
सौ. कांचन केतकर
सौ. शिवकन्या पटवे
डॉ. अनिल सिंगारे
डॉ. रावसाहेब शेळके
श्री मरीबा चंदनशिवे
श्री संतोष शिंदे
डॉ सतीश चापले
श्री विशाल कुलकर्णी
श्री शेखर पाटील
श्री संजय मेहता
श्री रामदास ठाकर
डॉ. अजित आपटे
डॉ. मोहन खडसे
सौ. शिवकन्या कदेरकर
श्री गौतम डांगे
डॉ. व्यंकटेश खरात
श्री रविंद्र जिंदे
डॉ. प्रभाकर लोंढे

संयोजक

श्री मोगल जाधव
विशेषाधिकारी, इतिहास व नागरिकशास्त्र
सौ. वर्षा सरोदे
विषय सहायक, इतिहास व नागरिकशास्त्र
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.

निर्मिति

श्री सच्चितानंद आफळे,
मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री प्रभाकर परब,
निर्मिति अधिकारी
श्री शशांक कणिकदळे,
सहायक निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक

श्री विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

विद्‌यार्थी मित्रो,

तीसरी से पाँचवीं कक्षा तक इतिहास और नागरिक शास्त्र विषय का अध्ययन तुमने 'परिसर अध्ययन भाग-१' एवं 'परिसर अध्ययन भाग-२' में किया है । छठी कक्षा से पाठ्‌यक्रम में इतिहास और नागरिक शास्त्र स्वतंत्र विषय हैं । छठी कक्षा से इन दोनों विषयों का समावेश एक ही पाठ्‌यपुस्तक में किया गया है । सातवीं कक्षा की पाठ्‌यपुस्तक तुम्हारे हाथों में सौंपते हुए हमें आनंद हो रहा है ।

यह विषय ठीक से समझ में आए, मनोरंजक लगे, हमारे पूर्वजों द्‌वारा किए गए कार्यों से प्रेरणा मिले; इस उद्‌देश्य से पाठ्‌यपुस्तक की रचना की गई है । इस पाठ्‌यपुस्तक के अध्ययन द्‌वारा तुम्हें ज्ञान के साथ-साथ आनंद भी प्राप्त होगा; ऐसा हमें लगता है । इस हेतु पाठ्‌यपुस्तक में रंगीन चित्र, मानचित्र दिए गए हैं । पाठ्‌यपुस्तक के प्रत्येक पाठ का ध्यानपूर्वक अध्ययन करो । इसका जो भाग तुम्हारी समझ में नहीं आएगा, वह शिक्षक, अभिभावक द्‌वारा समझो । चौखटों में दी गई जानकारी तुम्हारे ज्ञान में वृद्‌धि ही करेगी ! इतिहास मनोरंजक विषय है और वह हमारा मित्र है, ऐसा मानकर यदि इस पुस्तक का अध्ययन करोगे तो निश्चित ही इतिहास के प्रति तुम्हें रुचि अनुभव होगी ।

इतिहास के भाग में 'मध्यकालीन भारत का इतिहास' दिया गया है । मध्यकालीन भारत के निर्माण में महाराष्ट्र के स्थान और भूमिका को केंद्र में रखकर पाठ्‌यपुस्तक की रचना की गई है । इसके द्‌वारा तुम्हें इस बात का बोध होना भी अपेक्षित है कि यदि हम भारत के नागरिक हैं तो साथ-साथ हमें कर्तव्यों का पालन भी करना चाहिए ।

नागरिक शास्त्र के भाग में भारतीय संविधान की पहचान कराई गई है । भारत के संविधान निर्माण की पृष्ठभूमि, संविधान की उद्‌देशिका और संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकारों और नीति निदेशक सिद्‌धांतों को प्रस्तुत किया गया है । तुम्हारा अध्ययन अधिक-से-अधिक कृतिप्रधान हो, इसके लिए उपक्रम दिए गए हैं । हम देश के भावी नागरिक हैं और हम देश का भविष्य बनाएँगे; यह बोध करते हुए ही तुम अगली कक्षा में प्रवेश करोगे ।

इतिहास के अध्ययन द्‌वारा हमें अपने पूर्वजों के पराक्रम और वीरता का ज्ञान प्राप्त होता है । इसी को नागरिक शास्त्र के अध्ययन का पुट मिल जाए तो हमारी समझ में यह भी आएगा कि देश और समाज का भविष्य निर्माण करने की दृष्टि से हमारे क्या कर्तव्य हैं । इसी के लिए यह संयुक्त अध्ययन का उपक्रम है ।

(डॉ.सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक : २८ मार्च २०१७

– शिक्षकों के लिए –

हमने छठी कक्षा में इतिहास और नागरिक शास्त्र विषयों की पाठ्यपुस्तकों का अध्यापन कार्य किया ही है। सातवीं कक्षा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में मध्यकालीन भारतीय इतिहास को प्रस्तुत किया गया है ।

इतिहास की इस प्रस्तुति की विशेषता यह है कि यह प्रस्तुति महाराष्ट्र केंद्रित है । हमारा प्रदेश यद्यपि भारतीय संघराज्य का एक अंग है फिर भी इतिहास का आकलन करते समय महाराष्ट्र की दृष्टि से अर्थात भारत के इतिहास में महाराष्ट्र का स्थान, भूमिका और उसके द्‌वारा दिए गए योगदान को सामने रखकर समझने का प्रयास करें तो विद्‌यार्थियों की राष्ट्रभावना अधिक परिपक्व होगी । हमारे पूर्वजों ने राष्ट्र के लिए निश्चित रूप से क्या किया है; इसका बोध होगा और इसी के द्‌वारा हमारे वर्तमान राष्ट्रीय दायित्व और कर्तव्य की अनुभूति भी अधिक विकसित होगी ।

इस संदर्भ में छत्रपति शिवाजी महाराज द्‌वारा स्थापित किया गया स्वराज्य स्वाभाविक रूप से महत्त्वपूर्ण सिद्‌ध होता है । स्वराज्य निर्माण को समझने के लिए शिवाजी महाराज का उदय होने से पूर्व की भारत और महाराष्ट्र में प्रचलित परिस्थितियों का आकलन करना होगा अर्थात भारत के इतिहास का आकलन करना होगा। इसी नीति को ध्यान में रखकर पुस्तक की रचना की गई है । शिवाजी महाराज द्‌वारा स्थापित स्वराज्य पर शिवाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात उत्तर से हुए आक्रमणों का सामना महाराष्ट्र ने किस प्रकार किया और किस प्रकार अपने स्वराज्य की रक्षा की; इसपर विचार-विमर्श किया गया है । इन आक्रमणों को विफल बनाने के बाद मराठों ने महाराष्ट्र की सीमाओं का विस्तार किया और अधिकांश भारत व्याप्त कर लिया । स्वराज्य का साम्राज्य में रूपांतर का विवेचन; यह उसका अगला हिस्सा है । यह तो सभी को ज्ञात है कि अंग्रेजों ने भारत पर विजय पाई और यहाँ शासन भी चलाया परंतु इस प्रक्रिया में अंग्रेजों को रोकने में महाराष्ट्र किस प्रकार अग्रसर था, इसे समझना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है । अंग्रेजों की प्रतिद्‌वंद्‌विता मराठों के साथ थी और उन्होंने भारत पर विजय पाई; लेकिन इसके लिए उन्हें मराठों से युद्‌ध करना पड़ा । यह बोध हमारी सामर्थ्य और कर्तव्य का है । अतः अध्ययन-अध्यापन करते समय यह भावना विद्‌यार्थियों के मन में अंकित होना अपेक्षित है । पाठ्यपुस्तक के इस दृष्टिकोण को चित्ररूप में मुखपृष्ठ पर व्यक्त किया गया है तथा मुखपृष्ठ पर मराठी सत्ता का विस्तार दर्शाने के लिए भारत के स्थूल मानचित्र का उपयोग किया गया है ।

नागरिक शास्त्र के भाग में भारत के संविधान का परिचय कराया गया है । इस विषय को एक ही शैक्षिक वर्ष में पढ़ाना संभव नहीं है । अतः इस विषय को दो कक्षाओं में विभाजित किया गया है । इस कक्षा में संविधान की आवश्यकता, संविधान में उल्लिखित मूल्य, उद्‌देशिका, मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य और नीति निदेशक सिद्‌धांतों जैसे घटकों पर बल दिया गया है । संविधान में उल्लिखित शासन व्यवस्था का स्वरूप और उसपर आधारित राजनीतिक प्रक्रिया का अध्ययन आठवीं कक्षा में करेंगे । इस दृष्टि से सातवीं तथा आठवीं कक्षा के नागरिक शास्त्र की विषयवस्तु एक-दूसरे की पूरक हैं । इसका आकलन विद्‌यार्थियों को भली-भाँति होगा और इसी दृष्टि से विषय की प्रस्तुति की गई है । विषयवस्तु की प्रस्तुति नवीनतापूर्ण ढंग से की गई है । वह ज्ञानरचनावाद पर आधारित है परंतु इसके परे जाकर राजनीतिक व्यवस्था के प्रति व्याप्त उदासीनता को दूर कर विद्‌यार्थियों को समाज का अंग बनाने हेतु प्राथमिकता दी गई है । विषयवस्तु की प्रस्तुति अत्यंत सरल भाषा में की गई है । इससे पाठ्यपुस्तक की पठनीयता में वृद्‌धि होने हेतु सहायता प्राप्त होगी ।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का अध्यापन करते समय शिक्षक समाचारपत्रों, दूरदर्शन के समाचारों, विषयतज्ञों द्‌वारा किए गए विश्लेषणात्मक अध्ययन का उपयोग करते हुए विद्‌यार्थियों में समग्र दृष्टिकोण विकसित होने हेतु सहायता करें । इतिहास और नागरिक शास्त्र का अध्ययन-अध्यापन वर्तमान घटनाओं के संदर्भ में करें तो वह कार्य अधिक सार्थक तो होगा ही परंतु इसी के साथ विद्‌यार्थियों को मूल्य आत्मसात करने में उनसे सहयोग प्राप्त होता है । हिंदी में व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ मूल रूप में रखी गई हैं ।

अनुक्रमणिका

मध्यकालीन भारत का इतिहास

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	इतिहास के साधन	१
२.	शिवाजी महाराज से पूर्व का भारत	५
३.	धार्मिक सौहार्द	११
४.	शिवाजी महाराज से पूर्व का महाराष्ट्र	१४
५.	स्वराज्य की स्थापना	१९
६.	मुगलों से संघर्ष	२४
७.	स्वराज्य का प्रशासन	२९
८.	आदर्श शासक	३३
९.	मराठों का स्वतंत्रता युद्ध	३७
१०.	मराठी सत्ता का विस्तार	४४
११.	राष्ट्ररक्षक मराठे	४७
१२.	साम्राज्य की प्रगति	५३
१३.	महाराष्ट्र में सामाजिक जीवन	५७

S.O.I. Note : The following foot notes are applicable : (1) © Government of India, Copyright : 2017. (2) The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher. (3) The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. (4) The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh. (5) The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified. (6) The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India. (7) The state boundaries between Uttarakhand & Uttar Pradesh, Bihar & Jharkhand and Chattisgarh & Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned. (8) The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

इतिहास अध्ययन निष्पत्ति : सातवीं कक्षा

सुझाई गई शिक्षा प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
विद्यार्थियों को जोड़ी में/गुट में/ व्यक्तिगत रूप में अध्ययन का मौका देना और उन्हें निम्न बातों के लिए प्रेरित करना । • पुस्तकें तथा स्थानीय परिसर में उपलब्ध ऐतिहासिक साधन उदा. हस्तलिखित/मानचित्र/स्पष्टीकरण/चित्र ऐतिहासिक वास्तु/फिल्म/चरित्रप्रधान/नाटक/दूरदर्शन/धारावाहिक, लोककला/नाटक पहचानना तथा उनका तत्कालीन कालखंड का इतिहास समझने की दृष्टि से संदर्भानुसार अर्थ लगाना । • उस विशिष्ट समय के घराने / राजवंश के उदय से परिचित होना तथा उस कालखंड की महत्त्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी कालरेखा के आधार से प्राप्त करना । • दिए हुए कालखंड की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना/ व्यक्तित्व का नाट्यीकरण/प्रस्तुतीकरण करना । उदा. रजिया सुलतान, सम्राट अकबर आदि । • मध्ययुगीन काल में समाज में आए परिवर्तन पर मत प्रदर्शित करना एवं वर्तमानकाल से उसकी तुलना करना । • प्रकल्प / परियोजना – घराने / राज्य / प्रशासकीय सुधार विशिष्ट कालखंड के स्थापत्य की विशेषताएँ । उदाहरण के लिए – खिल्जी, मुगल आदि पर परियोजना बनाना । • नवीन धार्मिक प्रवाह और आंदोलन की शुरुआत के लिए कारण बनी बातों का परिचय, संतों के अभंग, भजन, कीर्तन, कव्वाली के माध्यम से करा लेना । आसपास के दरगाह, गुरुद्वारा, मंदिर–जो भक्ति आंदोलन/सूफी पंथ से संबंधित हैं, उनकी जानकारी लेकर, विविध धर्मतत्त्वों पर चर्चा करना । • शिवपूर्वकालीन भारत, शिवपूर्वकालीन महाराष्ट्र, स्वतंत्रता संग्राम, पेशवाकाल और मराठी सत्ता का विस्तार आदि की जानकारी प्राप्त करना ।	**विद्यार्थी –** • इतिहास के विविध साधनों को पहचानते हैं और उनका वर्तमानकालीन इतिहास के पुनर्लेखन के लिए उपयोग स्पष्ट करते हैं । • इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं । • मराठा और मुगलों के संघर्ष का विश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन करते हैं । • शिवराज्याभिषेक के कारणों को स्पष्ट करते हैं । • मध्यकाल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं । • मध्यकाल के दौरान हुए सामाजिक–राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करते हैं । • छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा लष्करी नियंत्रण के लिए प्रयोग किए गए प्रशासकीय मार्ग तथा व्यूहरचना का विश्लेषण करते हैं । • मंदिरों, मकबरों और मस्जिदों के निर्माण में प्रयुक्त की गईं विशिष्ट शैलियों और तकनीक की विशेषताओं का उदाहरणों के साथ वर्णन करते हैं । • संतों की सीख में होने वाली समानता को पहचानते हैं । • भक्ति और सूफी संतों के काव्य में कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते हैं । • पानीपत की लड़ाई के कारणों की जाँच पड़ताल करते हैं । • मराठी सत्ता का अखिल भारतीय स्तरपर शक्तिशाली सत्ता के रूप में उदय हुआ, इस बात को तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा स्पष्ट करते हैं ।